अध्याय -१२

द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

भाषा की परिवर्तनशीलता -

परिवर्तन इस सृष्टि का नियम है। यहाँ की हर वस्तु परिवर्तित होती रहती है। भाषा भी उसका अपवाद नहीं है। भाषा का प्रयोग करने वाला मनुष्य और समाज परिवर्तित होता रहता है और उसके साथ-साथ भाषा भी परिवर्तित होती रहती है। भाषा के इस परिवर्तन को विकार, विकृति या विकास भी कहा जाता है। भाषा के पाँच अंग हैं: ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ। परिवर्तन इन पाँचों ही अंगों में होता है, जिन्हें क्रमशः ध्वनि-परिवर्तन, शब्द-परिवर्तन, रूप-परिवर्तन, वाक्य-परिवर्तन तथा अर्थ परिवर्तन कहते हैं। इनका वर्णन आगे के अध्यायों में किया गया है।

भाषा में परिवर्तन या विकास के कारण -

भाषा में उपर्युक्त प्रकार के परिवर्तनों के पीछे कुछ कारण कार्य करते हैं। यों तो ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य तथा अर्थ सभी के परिवर्तनों के कारणों को अलग-अलग लेकर विस्तार से विचार किया जा सकता है, किन्तु यहाँ संक्षेप में कुछ अत्यन्त प्रमुख तथा महत्त्वपूर्ण कारणों को एक साथ लिया जा सकता है। इन कारणों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - (अ) बाह्य (ब) आंतरिक।

(अ) बाह्य कारण -

1. भौगोलिक कारण - भाषा किसी विशेष भू-भाग में बोली जाती है और वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ अनेक प्रकार से उसे प्रभावित करती है या उसके विकास में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उसके पक्ष या विपक्ष में काम करती है। कोई प्रदेश आक्रमण करने योग्य या सांस्कृतिक, व्यापारिक या धार्मिक सम्पर्क स्थापित करने योग्य है या नहीं यह बहुत कुछ उसकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है। उसकी सम्पन्नता-असम्पन्नता भी उसी पर आधारित होती है और भाषा का भी उनसे काफी संबंध है। बाह्य सम्पर्क से भाषा सभी क्षेत्रों में अन्य भाषाओं से प्रभावित हो सकती है। इसके अतिरिक्त भौगोलिक वातावरण के अनुसार ही भाषा का शब्द समूह होता है। हिन्दी की बोलियाँ कृषि-विषयक शब्दावली में बहुत सम्पन्न हैं, इसके विपरीत अकृषिप्रधान देश इंग्लैण्ड की भाषा में इस विषय की सम्पन्नता सम्भव नहीं है। अब यदि दोनों भाषाओं को अपने वर्तमान भौगोलिक वातावरण से हटा कर एक-दूसरे के वातावरण में कर दें तो सहज ही कुछ दिनों में दोनों का शब्द-समूह परिवर्तित हो जाएगा। आर्य जब तक रेगिस्तानी भाग से परिचित नहीं थे तब तक उष्ट्र का प्रयोग विशेष प्रकार के भैंसे के लिए होता था, किन्तु रेगिस्तानी प्रदेश से परिचित होने के बाद ऊँट की बहुतायत के कारण इसका अर्थ ऊँट हो गया। अंग्रेजी में ’काॅर्न‘ का सामान्य अर्थ ’गल्ला‘ (अनाज, अन्न) है, किन्तु यह शब्द जब अंग्रेजों के साथ अमेरिका पहुँचा और वहाँ ’मक्का‘ की पैदावार ही विशेष होती थी, अतः अमरीकी अंग्रेजी में इस शब्द के अर्थ में थोड़ा परिवर्तन हुआ और यह ’मक्का‘ का भी वाचक हो गया। मैदान में भाषा अपेक्षाकृत दूर-दूर तक एक ही रहती है, किन्तु पहाड़ी भागों में आवागमन की असुविधा के कारण भाषा के छोटे-छोटे रूप विकसित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए राजस्थान के दक्षिणी प्रदेश मेवाड़ अरावली की पहाड़ियों से घिरा होने से सभी क्षेत्रों में कम सम्पर्क के कारण इस छोटे से क्षेत्र में अनेक बोलियाँ पाई जाती हैं। इस प्रकार भाषा-परिवर्तन में भौगोलिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा हाथ होता है।

2. ऐतिहासिक कारण - इतिहास की घटनाएँ भी भाषा को प्रभावित करती है। मुसलमान भारत में आए और बस गए। परिणाम यह हुआ कि भारतीय भाषाओं का शब्द-समूह बहुत परिवर्तित हो गया। अकेले हिन्दी में अरबी-फ़ारसी-तुर्की-पश्तो शब्दों की संख्या 6000 से ऊपर है। इसी प्रकार यूरोपीयों ने हमारे इतिहास को प्रभावित किया और उनके सम्पर्क से भाषाएँ प्रभावित हुई हैं। हिन्दी में अंग्रेजी शब्द 5000 से ऊपर हैं। शब्द-समूह के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी यह प्रभाव पड़ता है। हिन्दी ने इन्हीं ऐतिहासिक कारणों से क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आॅ इन छः (5 व्यंजन, 1 स्वर) नई ध्वनियों को ग्रहण किया है। उसकी वाक्य-रचना भी फ़ारसी तथा अंग्रेजी से काफी प्रभावित हुई है। फ़ारसी ने एक सीमा तक रूप रचना को प्रभावित किया है। आर्य भारत में आए और द्रविड़ तथा मुंडा लोगों से इनका सम्पर्क हुआ। परिणामस्वरूप ध्वनि, रूपरचना, शब्द-समूह तथा वाक्यगठन के क्षेत्र में एक ओर तो संस्कृत तथा उससे विकसित भाषाएँ प्रभावित होकर परिवर्तित हुईं और दूसरी ओर द्रविड़ तथा मुंडा भाषाएँ भी प्रभावित होकर परिवर्तित हुए बिना नहीं रह सकीं। इस तरह इतिहास भी भाषा को प्रभावित करता है।

3. सांस्कृतिक कारण - दो भाषा-भाषियों में सांस्कृतिक सम्बन्ध के कारण भी उनकी भाषाओं पर प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव प्रायः शब्द भंडार के क्षेत्र में पड़ता है, जिससे भाषा का शब्द-समूह परिवर्तित होता है। समय-समय पर भारत का सुमेरी, अरबी, चीनी, जापानी, ईरानी तथा पूर्वी एशिया के लोगों से सांस्कृतिक सम्बन्ध था जिसके परिणामस्वरूप शब्दों का आना-जाना खूब हुआ। सांस्कृतिक सम्बन्धों में प्रायः वही भाषा अधिक प्रभावित करती है जिसके बोलने वाले सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक श्रेष्ठ होते हैं। यही कारण है कि उपर्युक्त लोगों की भाषाएँ संस्कृत को प्रभावित करने की तुलना में संस्कृत से अधिक प्रभावित हुईं। इन्दोनेशिया तथा मेलेशिया आदि में संस्कृत के अनेकानेक शब्द आज भी तद्भव रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं।

अन्य संस्कृतियों के सम्पर्क से भाषाओं में परिवर्तन तो होता ही है स्वयं की अपनी संस्कृति से भी भाषाओं में परिवर्तन होता है। समय के साथ संस्कृति और सभ्यताएँ भी बदलती रहती हैं और भाषा भी उसके साथ ही परिवर्तन के पथ पर पढ़ती जाती है। मध्ययुग में पगड़ी, मिर्ज़ई, झुल्ला, झुल्ली, अंगरखा, नीमास्तीन आदि कपड़ों का प्रयोग होता था, अतः ये शब्द हिन्दी में थे, अब हमने इनमें जिन्हें पहनना छोड़ दिया उनके लिए प्रयुक्त शब्द भी हमारे शब्द समूह से निकल गए और नए शब्द कोट, पैंट, ब्लाउज, निकर, हैट, टाई आदि नई वस्तुओं के साथ आ गए। खान-पान, खेल-कूद, चिकित्सा, शिक्षा आदि के क्षेत्र में भी इसी प्रकार अनेकानेक परिवर्तन हुए हैं, जिनका प्रभाव भाषा के शब्द-समूह पर भी पड़ा है। बहुत प्रयोग के बाद कुछ विशेष प्रकार के शब्द सभ्य और संस्कृत समाज के लिए अप्रयोग्य माने जाने लगते हैं। अंग्रेजी में ’लैट्रिन-यूरिनल‘ के स्थान पर ’बाथरूम‘ शब्द इसलिए आया ताकि वह सभ्य लगे। वस्तुतः बोलने वालों की सभ्यता और संस्कृति में विकास के साथ-साथ उनकी भाषा में भी विकास होता है। यह विकास शब्द-समूह या अर्थ के अतिरिक्त अभिव्यंजना की दृष्टि से भी होता है। अंग्रेजी, रूसी, जर्मन या फ्रैंच जैसे अंग्रेजों, रूसियों, जर्मनों एवं फ्रांसीसियों का विकास होता गया उनकी भाषाएँ भी अधिक विकसित और अभिव्यक्ति की दृष्टि से सम्पन्न होती गईं।

4. साहित्यिक कारण - साहित्यिक कारणों से भी भाषा में परिवर्तन होता है। छायावाद ने तत्कालीन साहित्यिक भाषा के शब्द-समूह को संस्कृतनिष्ठ बना दिया। बाद में प्रगतिवादी आन्दोलन ने हिन्दी भाषा को पुनः धरती की ओर मोड़ा और शब्द-समूह में संस्कृत के शब्द कम होते गए तथा दैनिक जीवन के शब्दों का व्यवहार बढ़ता गया। यूरोपीय साहित्य के सम्पर्क ने 1950 के बाद हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति को विशेषतः काव्य के क्षेत्र में - बहुत अधिक प्रभावित किया। प्रयोगवादी तथा नई कविता की भाषा इसका प्रमाण है। नए प्रतीक, नई अभिव्यंजना ने भाषा को इतना परिवर्तित किया है कि वह बहुतों के लिए अबोधगम्य बन गई है। कंुठा, झेला हुआ यथार्थ, भोगा हुआ सत्य, संत्रास जैसे पचासों प्रयोगों की आवृत्ति बहुत बढ़ गई है। इस प्रकार की बातें सभी भाषाओं में देखी जा सकती है। काव्यशास्त्रीय प्रभाव ने हिन्दी आलोचना की भाषा को संस्कृत शब्दों से बोझिल कर दिया है। इस प्रकार आज हिन्दी भाषा का नई कविता में एक रूप है, आलोचना में दूसरा रूप है तथा कथा साहित्य में एक तीसरा रूप है।

5. सामाजिक कारण - समाज में परिवर्तन भी भाषा को प्रभावित करता है। जापान में सामंती युग में भाषा में आदर-अनादर आदि के आधार पर क्रिया, सर्वनाम, संज्ञा, विशेषण आदि के कई स्तरों के प्रयोग चलते थे। राजा के लिए प्रयुक्त भाषा या राजा द्वारा प्रयुक्त भाषा और ही होती थी। अब धीरे-धीरे ये अन्तर लुप्त होने की कगार पर है। हिन्दी प्रदेश में ही मध्ययुग में जहाँपनाह, अन्नदाता, हुकुम, सरकार आदि शब्द सम्बोधन में खूब चलते थे। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होने से अब ये बहुत कम हो गए हैं और समाप्त प्रायः हैं। सामाजिक परम्पराओं के समाप्त होने से दंडवत, साष्टांग प्रणाम जैसे प्रयोगों का स्थान नमस्कार, नमस्ते लेते जा रहे हैं। वस्तुतः भाषा समाज में उत्पन्न हुई है, समाज में प्रयुक्त होती है, अतः समाज में परिवर्तन के साथ उसमें परिवर्तन सहज ही है। इसलिए भाषाविज्ञान की समाजभाषाविज्ञान नामक एक नई शाखा विकसित हो गई है, जिसमें समाज और भाषा के संबंध तथा तद्नुरूप परिवर्तन आदि अनेक बातों पर विचार किया जाता है।

(ब) आंतरिक कारण -

 1. प्रयत्न लाघव - भाषा में परिवर्तन का सबसे अधिक सशक्त और व्यापक कारण है ’प्रयत्न लाघव‘। मनुष्य कम-से-कम प्रयत्न से अधिक-से-अधिक काम निकालना चाहता है। इसे मुख-सुख या उच्चारण सुविधा या उच्चारण-सौकर्य भी कहा जाता है। ध्वनि-परिवर्तन में यह कारण बहुत स्पष्ट रूप से देखा जाता है। उच्चारण-सुविधा के लिए शब्दों की ध्वनियों में कुछ परिवर्तन हो जाते हैं। ये परिवर्तन निम्नलिखित प्रकार से होते हैं - (1) लोप (2) आगम (3) विपर्यय।

 (1) लोप - उच्चारण की सुविधा के लिए किसी शब्द में किसी ध्वनि का लोप (विलुप्त) हो जाना ही लोप कहलाता है। जैसे - स्टेशन का टेसन कहना। यहाँ उच्चारण की सुविधा के लिए ’स्‘ ध्वनि का लोप हो कर टेसन ही रह गया है। इसी प्रकार जंसा (टाॅक) में स (ल) का लोप हो गया है। अन्य उदाहरण - च्ेलबीवसवहलए ादवूए ूतपजम आदि में प्स, क्न, व का प्रयोग दुष्कर होने से क्रमशः इन ध्वनियों को छोड़ते हुए साइकोलाॅजी, नो, राइट उच्चरित किया जाता है।

 (2) आगम - जहाँ कुछ ध्वनियों का लोप होता है वहीं उच्चारण की सुविधा के लिए कुछ ध्वनियाँ अतिरिक्त जोड़ दी जाती हैं, उसे आगम कहा जाता है। उदाहरण के लिए राजेन्द्र का राजेन्दर, सूर्य का सूरज, पूर्व का पूरब, समुद्र का समुन्दर। इनमें क्रमश द्र, र्य, र्व, द्र का उच्चारण कठिन होने के कारण ’राजेन्द्र‘ में द् का द हो गया, सूर्य में र् का र होकर ज अतिरिक्त ध्वनि का आगम हुआ।

 (3) विपर्यय - मुख सुख या उच्चारण की सुविधा के लिए जब किसी शब्द में ध्वनियों का स्थान परिवर्तन हो जाता है, वहाँ विपर्यय होता है। जैसे - ब्राह्मण को ब्राम्हण कहना। (यहाँ ह् के स्थान पर म् आ गया है।) चिह्न - चिन्ह (यहाँ ह् के स्थान पर न् आ गया है। ) गदहा-गधा, कमल-कवँल, वर्ष-बरस आदि भी इसी कारण हुए हैं। ध्वनि परिवर्तन होते-होते रूप घिसकर मूल शब्द मात्र हो या रह जाते हैं, अतः उन्हें नए सिरे से बनाना पड़ता है, जैसे - ’रामः‘ के स्थान पर ’राम ने‘ या ’रामं‘ के स्थान पर ’राम को‘ आदि। इस प्रकार रूप भी बदलते हैं। अन्त में ध्वनि का प्रभाव वाक्य रचना पर भी पड़ता है। संस्कृत में ’रामः गच्छति‘ हिन्दी में ’राम जाता है‘ बन जाता है। अनेक वाक्यों को प्रयत्न-लाघव या मुख-सुख के लिए हम संक्षिप्त कर देते हैं, इस प्रकार वाक्य-गठन में परिवर्तन हो जाता है। ’राम नहीं जा रहा है‘ के स्थान पर ’राम नहीं जा रहा‘ कहने लगे हैं। यहाँ ’है‘ को छोड़ दिया गया है। इसी प्रकार ’अच्छे-अच्छे व्यक्तियों के दर्शन किए हैं‘ इस वाक्य के स्थान पर ’अच्छे-अच्छों के दर्शन किए हैं‘ कह देते हैं। ’हस्तन् मृग‘ को संक्षेप करके ’हस्तन‘ कहा गया और ’हाथवाले‘ का अर्थ ’हाथी‘ जानवर हो गया। अंग्रेजी में स्कूल-काॅलिज के प्रधान अध्यापक को पहले ’प्रिंसीपल टीचर‘ कहते थे किन्तु अब ’प्रिंसीपल‘ ही कहते हैं। यह सब मुख-सुख के कारण हुआ।

 2. अज्ञान - बोलने वालों का अज्ञान भी कई रूपों में भाषा को प्रभावित करता है। विदेशी शब्दों का उच्चारण इसलिए प्रायः कुछ का कुछ हो जाता है। हर व्यक्ति उनका ठीक उच्चारण तो जनता नहीं, अतः परिवर्तन हो जाता है। कलेक्टर को कलट्टर, टाइम को टेम, डज़न को दर्जन, आगस्ट को अगस्त, ट्रेज़री को तिजोरी, गार्ड को गाट, पोस्टकार्ड को पोस्टकाट कहना अंग्रेजी भाषा के प्रति अज्ञान से ही हुआ है। इसी प्रकार अंग्रेजों कोे हिन्दी का ठीक ज्ञान न होने से उन्होंने ’गंगाजी‘ को ’गैंजिज़‘ कहना प्रारंभ कर दिया। ईरानी शब्द ’हिन्दीक‘ अर्थात् ’हिन्दी का‘ परवर्तित होते-होते इंदिका-इंदिया-इंडिया हो गया। वस्तुतः इस प्रकार के परिवर्तन का आधार है अनुकरण की अपूर्णता, किन्तु अनुकरण की अपूर्णता भी वहीं होती है जहाँ अज्ञान होता है।

 अज्ञान अर्थ-परिवर्तन के क्षेत्र में एक-दूसरे प्रकार से काम करता है। उदाहरण के लिए ’हर‘ का अर्थ है ’में‘ और इस तरह ’दर हकीक़त‘ या ’दरअसल‘ का अर्थ है ’असल में‘ किन्तु जो लोग ’दर‘ के अर्थ से परिचित नहीं हैं, वे अतिरिक्त ’में‘ जोड़कर ’दर हक़ीक़त में‘ तथा ’दरअसल में‘ बोलने लगे हैं। इस प्रकार अर्थ हुआ ’हकी़कत में में‘। इसके पीछे अज्ञान ही है। इसी प्रकार ’सज्जन व्यक्ति‘ कहना भी गलत है क्योंकि इसका शब्द विभाजन करने पर हमें मिलता है ’सत् $ जन $ व्यक्ति‘ चूँक ’जन‘ और ’व्यक्ति‘ एक ही हैं अतः अज्ञानता के कारण ’सज्जन‘ में ’व्यक्ति‘ अतिरिक्त जोड़ दिया गया है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण देखिए - विंध्याचल पर्वत (विंध्य $ अचल $ पर्वत) अर्थात् ’विंध्य $ पर्वत $ पर्वत‘। (अचल का अर्थ पर्वत ही होता है।) अज्ञानता के कारण ही सौन्दर्य के स्थान पर सौंदर्यता तथा पांडित्य के स्थान पर पाण्डित्यता शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

 3. बल - भाषा-परिवर्तन में बल कई प्रकार से काम करता है। ध्वनि के क्षेत्र में प्रायः ऐसा होता है कि जिस व्यक्ति या अक्षर पर बलाघात होता है, वह तो स्पष्ट और पूरी तरह उच्चरित होती हैं, किन्तु आसपास की ध्वनियों पर बल कम हो जाता है, अतः कभी तो वे हृस्व हो जाती हैं, कभी अस्पष्ट और अंततः कभी-कभी लुप्त भी हो जाती हैं। लो लोग बाज़ार, साहित्य, बारूद जैसे शब्दों में ज़ा, हि, रू के उच्चारण पर विशेष बल देते हैं, उनके उच्चारण में ये शब्द क्रमशः बज़ार, सहित्य, बरूद हो जाते हैं। इसी प्रकार ’आभ्यंतर‘ शब्द से ’भीतर‘ शब्द का बनना भी ’भ्यन्‘ पर बल देने से हुआ है।

 बल देने से रूपरचना में भी अन्तर आ जाता है। जैसे चलकर-चलकर के, अनेक से अनेकों (बहुवचन का बहुवचन जबकि अनेक अपने आप में बहुवचन है), ’श्रेष्ठ-श्रेष्ठतम-सर्वश्रेष्ठ‘ (यहाँ श्रेष्ठ कहना ही पर्याप्त था। श्रेष्ठ का अर्थ ही होता है सबसे अच्छा, किन्तु बल देने के लिए श्रेष्ठतम या सर्वश्रेष्ठ हो गया।) इसी प्रकार ’दरवाजे़‘ अर्थात् ’दरवाजे़ पर‘ यहाँ ’पर‘ अनावश्यक आया है। वाक्य में सही प्रयोग होगा ’उसके दरवाजे़ कभी मत जाना।‘ किसी शब्द के कई अर्थों में किसी एक पर बल देने से ही वही प्रमुख हो जाता है तथा शेष अर्थ प्रायः लुप्त हो जाते हैं।

 4. जानबूझ कर परिवर्तन - कुछ वक्ता या भाषा-प्रयोक्ता नवीनता, शुद्धता, किसी शब्द को भाषाविशेष के अनुरूप रूप या अपनी अभिव्यक्ति को वैयक्तिकता देने के लिए भाषा में विभिन्न स्तरों पर जानबूझकर परिवर्तन कर देते हैं। मैक्समूलर संस्कृत के प्रसंग में अपने आपको ’मोक्षमूलर‘ कहा करते थे क्योंकि ’मोक्ष‘ संस्कृत में पवित्र शब्द है। ज्तंहमकल का त्रासदी, ब्वउमकल का कामदी, ।बंकमउल का अकादमी, ।समगंदकमत का अलेक्षेन्द्र, छपजतवहमद का नेत्रजन, कोलकाता का केलकेटा परिवर्तन जानबूझकर किए गए हैं। ये सहज नहीं हैं। ये परिवर्तन प्रायः शब्दों की ध्वनियों में किए जाते हैं। वाक्यों में जानबूझकर किए परिवर्तन भी कभी-कभी दिखाई पड़ते हैं। हिन्दी में ’मात्र‘ का प्रयोग पहले शब्दों के बाद होता था, पहले किया जाने लगा है। विरोध मात्र-मात्र विरोध। इसी प्रकार विशेषण का परवर्ती प्रयोग भी मिलने लगा है। ’एक रात की कहानी‘ के स्थान पर ’कहानी एक रात की।‘

 5. सहज विकास - प्रयोग होते-होते हर वस्तु परिवर्तित होती है। यह प्रक्रिया अत्यंत सहज है। इसी कारण उपर्युक्त कारणों में किसी के भी न होने पर भी भाषा विकसित या परिवर्तित होती रहती है। इन्हें स्वयंभू परिवर्तन भी कहते हैं। ये परिवर्तन ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ सभी में होते रहते हैं। बहुत प्रयोग से शब्दों की आर्थिक शक्ति क्षीण हो जाती है और अतिरिक्त शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। कभी ’बढ़िया‘ पर्याप्त था, अब ’बहुत बढ़िया‘ का प्रयोग अपेक्षित है। अति परिचय से अवज्ञा वाली बात है। इसलिए कलाकार पुराने घिसे-पिटे शब्दों को छोड़कर या तो पुराने साहित्य से शब्द लेते हैं या कभी-कभी नए शब्द गढ़ लेते हैं। सत्य-सच, गर्दभ-गधा, महिषी-भैंस जैसे उदाहरणों में कुछ परिवर्तन तो सकारण हैं तथा कुछ इस प्रकार के सहज या स्वयंभू भी हो सकते हैं।

 6. सादृश्य - यह कारण आंतरिक भी हो सकता है, बाह्य भी। किसी दूसरी भाषा के सादृश्य पर परिवर्तन बाह्य है तो भाषा में किसी एक शब्द के आधार पर दूसरे में परिवर्तन आंतरिक है। एक भाषा-भाषी जब दूसरी भाषा सीखकर बोलता या लिखता है तो प्रायः उसकी मातृ-भाषा उसकी नवभाषा-अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है। संस्कृत की अपनी अभिव्यक्ति है: ’रामः आह गमिष्यामीति‘ (राम ने कहा मैं जाऊँगा) हिंदी में इसमें ’कि‘ लगाने की परम्परा है अतः आधुनिक संस्कृत में लोग बोलने लगे हैं: ’रामः आह यदहं गमिष्यामि।‘ इसी प्रकार रूप-रचना के क्षेत्र में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं। शहर से शहराती (देहाती के सादृश्य पर), घर से घराती (बराती के सादृश्य पर), आधा से अधूरा (पूरा के सादृश्य पर), कर से करा (पढ़ा, लिखा, चला, बोला आदि के सादृश्य पर)। ध्वनि के क्षेत्र में भी परिवर्तन सादृश्य से होते हैं। यहाँ सादृश्य कभी-कभी लौकिक व्युत्पत्ति के रूप में काम करता है। रायबरेली के सादृश्य देख बहुत से अनपढ़ लोग ’लायब्रेरी‘ को भी ’रायबरेली‘ कह देते हैं। ऐसे ही हीराकुद का हीराकंुड शब्द ’कुण्ड‘ के सादृश्य पर बना। इसी प्रकार स्वर्ग के सादृश्य पर नरक को भी नर्क कह देते हैं। इसी प्रकार सगुण भी निर्गुण के सादृश्य पर सर्गुण हो गया है। पहले संस्कृत में मूल शब्द ’एकदश‘ था, ’द्वादश‘ के सादृश्य पर वह ’एकादश‘ हो गया।

 इस प्रकार से हम देखते हैं कि इनमें से कुछ का प्रभाव तो स्पष्ट है, कुछ का प्रभाव कालान्तर में ही दृष्टिगोचर होता है। अधिकतर एक समय मंे एक से अधिक घटक भाषा-विकास या परिवर्तन के कारण बनते हैं। वास्तविकता तो यह है कि भाषा में विकास या परिवर्तन अनेक वर्षों के पश्चात् ही दिखाई देता है। हाँ, राजनीतिक उथल-पुथल इसका अपवाद भी है।